Part I Hon's
Paper. I

RAJENDRA CHOLA

राजेन्द्र चोल की जीवनी और उपलब्धियाँ

Determine the achievements of Rajendra Chola.

ANSWER. — परकेशरी वर्मन राजेन्द्र चोल प्रथम अपने पिता का योग्य उत्तराधिकारी था। पैत्रिक रूप में उसे एक विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकार मिला। जिसके संगठन में सेनापति और दंडनायक के रूप में उसका भी महत्वपूर्ण योगदान था। वह सुनियमित और सुकेन्द्रित सेना तथा प्रशासन का स्वामी था तथा उसके पास प्रचंड भी सेना थी। इन्हीं सब तत्वों के आधार पर अपने 33 वर्षीय शासनकाल में उसने चोल साम्राज्य का पूर्ण विकास किया और भारत के यश को सुदूर पूर्व यहाँ तक की चीन तक फैलाया। उसका शासन न केवल दक्षिण भारत का अपितु भारतीय इतिहास का गरिमामय अध्याय है।

स्रोत — राजेन्द्र चोल के इतिहास के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध है तथा इसके शासन का तिथिक्रम अपेक्षाकृत स्पष्ट है। इसके शासनकाल में अनेक शिलालेख प्रकाशित हुए। तिरुवालंगुडु और करंदै (तंजोर) दानपत्रों से भी इसका वृतान्त स्पष्ट होता है। साथ ही अन्य राजवंशों के अभिलेखों से भी इसके संबंध में बातें जानी जाती हैं। ज्यों-ज्यों राजेन्द्र की राजनीतिक उपलब्धियों में वृद्धि होती जाती थी इसके नाम के साथ उपलब्धि सूचक अन्य राजनीतिक उपाधियाँ भी जुड़ती जाती थी। इस तरह के क्रम उसके शासन के 13वें वर्ष तक उपाधियां के तिथिक्रम से यह जानना भी सरल है कि उसकी राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों का क्रम क्या था।

राजेन्द्र ने अपने शासन के प्रारम्भ में ही अर्थात सातवें राजत्व वर्ष में अपने पुत्र राजाधिराज को युवराज नियुक्त कर दिया था। इस तिथि से अगले 34 वर्षों तक राजाधिराज राजकेशरी वर्मन अपने पिता राजेन्द्र परकेशरी वर्मन का सहयोगी रहा। इस अवधि में उसके द्वारा भी कुछ अभिलेख प्रकाशित किये गये जो राजेन्द्र के अभिलेखों से ज्ञातव्यों

की न केवल सम्पुष्टि करते हैं अपितु वे पूरक भी हैं।
राजेन्द्र के इतिहास के लिए महावंश का भी अध्ययन
उपादेय है। इसमें राजेन्द्र के लंका अभियान का वर्णन है।

दिग्विजय — राजेन्द्र के आरम्भिक विजयों के रूप में ऐसा उल्लेख है कि उसने इडितुनाउ, वनवासी, कोल्लिपाकै और मण्णैकुडकुम का विजय किया। इडितुरैनाउ, कृष्णा, तुंगभद्रा, नदियों की दक्षिणी दोआब में था। कोल्लिपाकै हैदराबाद के दक्षिण में स्थित कुलप से तुलनीय है। वनवास की पहचान वनवासी और मण्णैकुडकुम की पहचान मान्यखेत अथवा मान्यखेट से की जा सकती है। ये सीमा विजित सत्याश्रय के साम्राज्य के अंग थे जिसने 1008 ई० तक शासन किया। ऐसी स्थिति में यह अनुमान करना ठीक है कि इन प्रदेशों को 1008 ई० के पूर्व ही उसने जीत लिया।

शासन के पूर्वें वर्ष में (1017-18) ई० राजेन्द्र ने सम्पूर्ण इलमण्डलम (लंका) पर विजय प्राप्त किया। "महावंश" के अनुसार इस समय लंका का राज्य महिन्द (महेन्द्र पंचम) था और उसके 36 वें राजत्व वर्ष में राजेन्द्र चोल का अभियान लंका पर हुआ था। इस अभियान का सामना इस तरह लंका का राजा न कर सका और बुरी तरह पराजित और अपमानित हुआ। करन्दै अभिलेख तथा अन्य अभिलेखों का विवरण है कि राजेन्द्र ने लंका के राजाओं को हराकर उनका मुकुट उसकी रानियों और कन्याओं तथा उनके सुन्दर और बहुमूल्य रत्न प्रभूत वैभव तथा सम्पूर्ण लंका को अधिकृत कर लिया। साथ ही लंका के राजा से वह मुकुट और इन्द्रमाला भी हस्तगत कर ली जिसे वरगुण पांडेय ने अपने विपन्नावस्था के कारण धरोहर के रूप में लंका के राजा के पास रख दी। पराजित होने के बाद लंका का महेन्द्र राजेन्द्र शरण में आ गया। "महावंश" का विवरण इस

अभिलेखिय कथन का पूर्णतया समर्थन करता है। इस प्रकार राजेन्द्र का अधिकार सम्पूर्ण लंका के बौद्धविहारों को बड़ी क्षति पहुंची। चोलों ने लंका में धन तंत्र को बड़ी क्षति पहुंची। कई शिव और विष्णु मंदिर स्थापित किये।

पांड्य और केरल जनपद ⟶ राजराजा ने अपने शासन के आरम्भिक वर्षों में ही पांड्य और केरल जनपद पर अधिकार कर लिया था। सम्भवतः इस क्षेत्र पर अपने प्रभुत्व के स्थायित्व के लिए राजेन्द्र को भी युद्ध करना पड़ा था यद्यपि यह क्षेत्र साम्राज्य का अंग बन चुका था। 1018 के आसपास अपने शासन के 6वें वर्ष में उसने केरल जनपद पर अधिकार कर लिया था सम्भवतः इस क्षेत्र पर अपने प्रभुत्व के स्थायित्व के लिए राजेन्द्र को भी युद्ध करना पड़ा था। यद्यपि यह क्षेत्र साम्राज्य का अंग बन चुका था। 1018 के आसपास अपने शासन के 6 वर्ष में उसने केरल तथा उसके आसपास के द्वीपों जिसमें मालद्वीप प्रमुख था को स्वीकार जीतकर पाण्ड्य जनपद को अधीन कर लिया वहां अपने पुत्र जयवर्मन सुन्दर चोल को उपराजा नियुक्त किया। जयवर्मन सुन्दर चोल को उपराजा नियुक्त किया। जयवर्मन सुन्दर चोल इन जनपदों पर उपराजा या युवराज के रूप में 1018 ई० से 1040 ई० तक प्रशासन करता रहा।

चालुक्य - चोल संघर्ष ⟶ 1021 ई० के लगभग चालुक्य चोल संघर्ष पुनः तीव्र उठा। पश्चिमी चालुक्य राजा राजसिंह द्वितीय के साथ उसका संघर्ष हुआ। चालुक्य पुलेखों से ज्ञात होता है कि जयसिंह द्वितीय ने "मुसंगी को अपनी पीठ दिखायी और छीप गया। संघर्ष का परिणाम कुछ भी रहा तुंगभद्रा तक के प्रदेश पर जयसिंह II का अधिकार बना रहा।

पूर्वी भारत की ओर ⟶ राजेन्द्र प्रथम ने पूर्वी भारत की ओर अपने अभियान का दायित्व अपने

सेनापति को सौंप दिया। चोल सेना गोदावरी पर और उड़ीसा को पारकर पश्चिमी बंगाल पहुंचा उसने दो शासकों को नष्ट किया, गंगा को पार किया, महीपाल प्रथम पर विजय प्राप्त की और स्वदेश लौट आया। विजयी सेनापति ने राजेन्द्र द्वारा भेजी गयी बधाई गोदावरी के तट पर प्राप्त

काडरम तथा सुमात्रा एवं मलाया के आसपास के राज्यों पर

श्रीविजय पन्नई मलैयूर मायिरुडिंगम इलंगाशोकम मप्पालम मेविलिंबंगम वलैप्पंदूरु तलैत्तक्कोलम तामलिंगम इलामुरिदेशम कडारम

काडरम के विरुद्ध राजेन्द्र प्रथम के अभियान का विवरण इस प्रकार दिया गया है। काडरम के राजा संग्राम विजयोत्तुंग वर्मन को उसकी सेना हाथियों तथा न्यायपूर्वक संचित धन सहित अपने अधिकार में करके उसने श्री विजय पन्नई प्राप मलैयूर को ~~करके उसने श्री विजय~~ मायुरुदिंगम इलांगाशोक, मप्पलम, मेविलिम्बंगम, वलैप्पंदुरु, तलैक्कोल मदलिंगम, इलामुरीदेसम, मानक्करम और काडरम पर अधिकार कर लिया जो गहरे समुद्र द्वारा सुरक्षित था। ये सभी राज्य सुमात्रा एवं मलाया प्रायद्वीप में तथा उसके आस-पास थे। करण्डे (तंजौर) दान पत्र से यह पता चलता है कि राजेन्द्र के काडरम अभियान से प्रभावित होकर कम्बुज नरेश ने अपनी राज्य लक्ष्मी की ~~सुरक्षा~~ रक्षा के लिए राजेन्द्र चोल से मैत्री सम्बन्ध स्थापित किया।

सोमेश्वर प्रथम — राजेन्द्र प्रथम के राज्यकाल के अंत में पश्चिमी चालुक्यों ने सोमेश्वर प्रथम के अधीन चोल राज्य पर आक्रमण किया। चोल युवराज राजाधिराज ने कृष्णा के तट पर पुण्डी के स्थान पर विजय प्राप्त की कल्याण को लूटा और द्वारपाल की मूर्ति को उठाकर ले गया चोल आक्रमण के लिए अपमान जनक और विनाशकारी

"सिद्धांत सारावली" के लेखक शिवाचार्य त्रिलोचन का उल्लेख है कि राजेन्द्र चोल ने गंगातट के कुछ शैव विद्वानों को कांचीपुरम में बसाया था जो इसके अभियान का एक सांस्कृतिक परिणाम

समझा जा सकता है। अपने पूर्वी भारत अभियान की सफलता के उपलक्ष में उसने एक तडाग निर्मित कराया और उसमें सैनिकों द्वारा डलवाया। तदुपरांत उसने गंगैकोंड की उपाधि धारण की उसके उत्तरी आर्काट में "गंगैकोण्ड" चोलपुरम नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया।

राजेन्द्र के जीवन काल में चोल साम्राज्य अचल रहा और राजनीतिक युद्धों को छोड़कर सर्वत्र शांति रही। अपनी 34 वर्षीय शासनकाल में उसने चोल साम्राज्य का सर्वांगीण विकास किया और चोल समृद्धि को अक्षुण रखा। उसका साम्राज्य इतना विस्तृत हो चुका था कि उसकी सुरक्षा के लिए कहीं न कहीं युद्ध चलते रहना अपरिहार्य सा हो गया था। युद्ध में निश्चित ही वह प्रचंड नीति अपनाया था। यहाँ तक कतिपय चालुक्य संग्राम में वह सामान्य नैतिक नियमों के परिचालन का भी ध्यान न रख पाता था और स्त्री, वृद्ध, ब्राह्मण तक को अपमानित आहत और भ्रष्ट किया करता था। किन्तु सामान्य प्रशासन में उसे प्रजा सुख का ही ध्यान अधिक रखता था।

राजेन्द्र के समस्त उपलब्धियों को हम उसके चार विरुदों के माध्यम से जान सकते हैं वो चार विरुद थे मुडिकोण्ड, गंगैकोंड, कडारगंगोगंगोण्ड और पंडित चोल।

"मुडिकोंड से उसके पाण्ड्य केरल और सिंहल के आधिपतित्व की सूचना मिलती है। गंगैकोंड की उपाधि में उसके वेंगी, उड़ीसा, और गंगा (बंगाल) तक के विजयों की ध्वनि है। तथा कडरंग गोंड उपाधि उसके कराह द्वीप के विजय का प्रतीत है। पंडित चोल से उसके विद्या और कला के प्रति अनुराग का पता चलता है। उसने चीनी सम्राट के साथ

मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये और 1016 तथा 1033
ई० में राजदूत गये। कहा जाता है कि राजेन्द्र प्रथम
एक वैष्णव केन्द्र में 340 विद्यार्थियों के लिए
एक वैदिक महाविद्यालय की व्यवस्था की। उसने
14 आचार्य नियुक्त किये। संस्था के खर्च के लिए
45 वेली भूमि दी।

इसप्रकार राजेन्द्र प्रथम महान पिता का
महानपुत्र था। वह लगभग 32 वर्ष तक चोल
साम्राज्य की शक्ति और सम्मान की वृद्धि में
संलग्न रहा।

श्री विजय — श्री वि...

Scanned with CamSc